अष्टायतन यात्रा

प्राचीन लिंगपुराण १२ के अनुसार यह यात्रा नैत्यिक रूप से भी होती थी और विशेष अवसरों पर भी लोग इसको करते थे।

अर्थात, ईश्वरगंगी तालाब में स्नान तथा समीप के योगेश्वर महोदय (म. न. के. ६६/४,) नरहरिपुरा का दर्शन-पूजन, तदुपरान्त औसानगंज के गोलाबाग में उर्वशीश्वर की, खोवा बाजार में लांगलीश्वर की, काशीपुरा में महारानी बेतिया के मन्दिर के पास आषाढीश्वर की, राजादरवाजे में भारभूतेश्वर की, सिगरा में टोले पर त्रिपुरान्तकेश्वर की, विश्वनाथ-मन्दिर के समीप अक्षयवट में नकुलीश्वर की तथा बड़े देव पर पुरूषोत्तम भगवान के मन्दिर में (मकान न. डी. ३८/२१) ञ्यम्बकेश्वर (प्रसिद्ध नाम त्रिलोकनाथ) की अर्चना इस यात्रा का क्रम है। काशीखण्ड के अनुसार :

दक्षेशः पार्वतीशश्च तथा पशुपतीश्वरः।
गङ्गेशे नर्मदोशश्च गभस्तीशः सतीश्वरः।। १३
अष्टमस्तारकेशश्च प्रत्यष्टमि विशेषतः।

वृद्धकाल में दक्षेश्वर, त्रिलोचन पर आदिमहादेव के मन्दिर में पार्वतीश्वर, नन्दनसाह मुहल्ले के समीप पशुपतीश्वर, वहीं पर गंगेश्वर (अथवा ज्ञानवापी के पूर्व पीपल के नीचे), त्रिलोचन पर नर्मदेश्वर, मंगलागौरी पर गभस्तीश्वर, रत्नेश्वर के पास वृद्धकाल की सड़क पर सतीश्वर तथा ज्ञानवापी के पास अथवा मणिकर्णिका घाट पर तारकेश्वर का दर्शन-पूजन करने का इस यात्रा में विधान है। यह यात्रा अष्टमी को विशेष रूप से होती है।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.